[This question paper contains 4 printed pages.]

(20) **Your Roll No..............** 2019 IC

**Sr. No. of Question Paper : 9469**

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : MIL, Hindi Bhasha Aur Sahitya – A

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi A – CBCS**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) कबीर इस संसार कों, समझाऊँ कै बार।

पूँछ जु पकड़ै भेद की, उतर्‌या चाहै पार।।

जैसी मुष तैं नीकसै, तैसी चालै नाहिं।

मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जांहिं।।

**अथवा**

मण थें परस हरि रे चरण ।।
सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण।
जिण चरण प्रह्लाद परस्याँ, इन्द्र पदवी धरण।
जिण चरण ध्रुव अटल करस्याँ, सरण असरण सरण।
जिण चरण ब्रह्मांड भेट्याँ, नखसिखाँ श्री धरण।
जिण चरण कालियाँ णाथ्याँ, गोपी लीला करण।
जिण चरण गोबरधन धारयाँ, गरब मधवा हरण।
दासि मीरा लाला गिरधर, अगम तारण तरण।

(ख) चल्यौ जाइ, ह्याँ को करै हाथिनु के व्यापार।
नहिं जानतु, इहिं पुर बसैं धोबी, ओड़, कुँभार ।।
नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत।
ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत ।।

**अथवा**

रूपनिधान सुजान लखें बिन आंखिन दीठि हि पीठि दई है।
ऊखिल ज्यौं खरकै पुतरीन मैं, सूल की मूल सलाक भई है।
ठौर कहूँ न लहै ठहरानि को मूदें महा अकुलानिमई है।
बूड़त ज्यौ घनआनँद सोचि, दई बिधि ब्याधि असाधि नई है ।।



(ग) अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।
इस तत्त्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ ।।

**अथवा**

अमल धवलगिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

2. किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए : (10)

(क) बिहारी ;

(ख) घनानंद ।

3. कबीर के दोहों के आधार पर उनकी भक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए । (10)

**अथवा**

मीरा के पदों का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'मेरे नगपति मेरे विशाल' ('हिमालय के प्रति') कविता के मूल कथ्य पर विचार कीजिए। (10)

**अथवा**

'जयद्रथ वध' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त जी की काव्य भाषा का विचार कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

(i) हिंदी भाषा की व्युत्पत्ति ;

(ii) ब्रजभाषा ;

(iii) आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ ;

(iv) कृष्ण भक्ति धारा ;

(v) रीतिमुक्त काव्य ;

(vi) नई कविता।

[This question paper contains 4 printed pages.]

(21) **Your Roll No...............** 2019

**Sr. No. of Question Paper : 9470** **IC**

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Paper : Hindi B

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

## छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10+10=30)

(क) यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान ।

शीश दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ।।

**अथवा**

कृपा सिन्धु बोले मुस्काई । सोइ करू जेहि तव नाव न जाई ।।

बेगी आनु जल पाय परवारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ।।

P.T.O.

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भव सिन्धु अपारा ।।

सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किए तिहु पगहु ते थोरा ।।

(ख) बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।

सौंह करै भौंहनु हँसे, दैन कहे, नटी जाइ ।।

**अथवा**

इंद्र जिमि जम्भ पर बाड़व सुंअभ पर, रावण सदम्भ पर रघुकुल राज हैं।

पौन बारिवाह पर संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहसबाहु पर राम द्विजराज हैं।

दावा द्रुमदंड पर, चीता मृग झुंड पर, भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज हैं।

तेज तम अंस पर कान्ह जिमी कंस पर, त्यों मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं ।।

(ग) प्रभु ईसा की क्षमाशीलता

नबी मुहम्मद का विश्वास

जीव दया जिनवर गौतम की

आओ देखो इसके पास।



**अथवा**

काट अंध-उर के बंधन-स्तर

बहा, जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;

कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे!

2. तुलसीदास **अथवा** कबीर का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

3. भूषण **अथवा** बिहारी के काव्य का सार लिखिए। (10)

4. 'वर दे वीणावादिनी' अथवा 'बालिका का परिचय' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (10)

5. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए: (5)

   (i) हिन्दी के उद्भव का सामान्य परिचय

   (ii) हिन्दी के अतिरिक्त किसी एक आधुनिक भारतीय भाषा का परिचय (5+5=10)

   (ख) किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए:

   (i) चारण काव्य

(ii) सूफी काव्य

(iii) रीतिमुक्त काव्यधारा

(iv) भारतेंदु युग

[This question paper contains 4 printed pages.]

(22) **Your Roll No.** ............... 2019

**Sr. No. of Question Paper : 9471** **IC**

Unique Paper Code : 62051204

Name of the Paper : Hindi – C

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) प्रभु तुमको कर दान किए ने

सब वांछित वस्तु विधान किए

तुम प्राप्त करो उनको न अहो

फिर है यह किसका दोष कहो

समझो न अलभ्य किसी धन को

नर हो, न निराश करो मन को।

P.T.O.

**अथवा**

तब से उनको रहा देखता धीरे-धीरे
अनगिनत पत्तों से लद, भर गयी झाड़ियाँ,
हरे-भरे टंग गए मखमली कई चँदोवे।
बेलें फैल गयीं बल खा, आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को,
मैं अवाक् रह गया-वंश कैसे बढ़ता है!

(ख) (i) कबीर संगत साध की, बेगि करीजै जाइ।
दुरमति दूर गंवाइसी, देसी सुमति बनाइ ।।

(ii) गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोंबिंद दियो बताय ।।

**अथवा**

ऊधो मन न भए दस बीस।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को आराधे ईस।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिँ कोटि बरीस।



तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारैं नंद-नंदन बिनु, और नहीं जगदीस।

(ग) (i) थोरे ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि।
तुमहूँ कान्ह मनो भए, आज कालि्ह के दानि ।।

(ii) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होय ।।

**अथवा**

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारिये।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारिये ।।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्‌यो सुजान सकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहे न दहै घनआनँद बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।

2. कबीरदास **अथवा** सूरदास का साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

3. घनानंद की काव्यानुभूति पर विचार कीजिए। (10)

**अथवा**

बिहारी के काव्य के भाव पक्ष की विवेचना कीजिए।

4. 'आः धरती कितना देती है' के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। (10)

**अथवा**

'नर हो, न निराश करो मन को–' कविता की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

(i) हिंदी का स्वरूप

(ii) अवधी बोली की विशेषताएँ

(iii) आदिकालीन रासो काव्य

(iv) कृष्ण–भक्ति काव्य

(v) भारतेंदुयुगीन साहित्य की विशेषताएँ

(vi) नवगीत (5×3=15)

[This question paper contains 4 printed pages.]

(23) **Your Roll No.** 2019

**Sr. No. of Question Paper : 9535** **IC**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik Kal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline – CBCS – DSE**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (20)

(क) मैया कबहुँ बढ़ैगी चोटी?

किती बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।

तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी।

काढ़त गुहत न्हवावत जैहें नागिन सी भुई लोटी।

काचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन रोटी।

सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।।

P.T.O.

(ख) रावरो रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं-ज्यौं निहारिये।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारिये।
एक ही जीव हुतो सु तौ वार्‌यो सुजान, सकोच औ सोच सहारिये।
रोकी रहै न दहै, घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारिये।।

(ग) लो यह लतिका भी भर लाई -
मधु मुकुल नवल रस गागरी।
अधरों में राग अमंद पिये
अलकों में मलयज बंद किये -
तू अब तक सोई है आली।
आँखों में भरे विहाग री।

(घ) जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया,
अंबर के आंगन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे,



जो छूट गए फिर कहां मिले,
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है,
जो बीत गई सो बात गई।

2. संत कबीरदास की निर्गुण भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

**अथवा**

गोस्वामी तुलसीदास की भाषा-शैली पर विचार कीजिए। (13)

3. घनानंद की विरह-भावना पर प्रकाश डालिए।

**अथवा**

प्रसाद की कविताओं के आधार पर उनकी राष्ट्रीय-भावना का विवेचन कीजिए। (13)

4. 'उनको प्रणाम' कविता के आधार पर नागार्जुन की भाषा-शैली पर विचार कीजिए।

**अथवा**

'जो बीत गई सो बात गई' कविता का भाव स्पष्ट कीजिए। (13)

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय लिखिए

सूरदास

मैथिलीशरण गुप्त (8)

6. 'बीती विभावरी जाग री' कविता का काव्य-सौंदर्य लिखिए।

**अथवा**

निम्नलिखित पंक्तियों का रचना-कौशल लिखिए - (8)

सारदूल को स्वाँग करि,
कूकर की करतूनि।
तुलसी तापर चाहिए,
कीरति बिजय बिभूति।

[This question paper contains 4 printed pages.]

(24) **Your Roll No.**............... 2019

**Sr. No. of Question Paper : 9556** **IC**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madyakal Aur Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – CBCS – DSE**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न–पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – (10 + 10)

(क) माला पहर्‌याँ कुछ नहीं, गाँठि हिरदा की सोइ।

हरि चरनूँ चित्त राखिये, तौ अमरापुर होइ।।

कैसौ कहा बिगाड़िया, जे मूड़े सौ बार।

मन कौ न कोइ मूड़िए, जामै विषै विकार।।

P.T.O.

(ख) रावरो रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिये ।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहि आनि तिहारियै ।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान! संकोच और सोच सहारिये ।
रोकी रहै न, दहै घनआनन्द बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।

(ग) धर्म का ले-लेकर जो नाम हुआ करती बलि, कर दी बंद ।
हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनन्द ।
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम ।
भिक्षु होकर रहते सम्राट दया दिखलाते घर-घर घूम ।।

(घ) जी, गीत जनम का लिखूँ मरण का लिखूँ
जी, गीत जीत का लिखूँ शरण का लिखूँ
यह गीत रेशमी है, यह खादी का
यह गीत पित्त का है, यह बादी का ।
है गीत बेचना वैसे बिल्कुल पाप
क्या करूँ मगर, लाचार हार कर
गीत बेचता हूँ ।

2. सूरदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए ।



**अथवा**

पाठ्यक्रम में निर्धारित दोहों के आधार पर तुलसीदास की काव्यकला पर प्रकाश डालिए । (13)

3. 'बिहारी रससिद्ध कवि हैं', स्पष्ट कीजिए ।

**अथवा**

'रईसों के सपूत कविता में निहित व्यंग्य का विवेचन कीजिए । (13)

4. नागार्जुन जन संवेदना के कवि हैं कथन को स्पष्ट कीजिए ।

**अथवा**

'जो बीत गई सो बात गई' कविता का गीतिकाव्य की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए । (13)

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** कवि का साहित्यिक परिचय लिखिए –

(i) बिहारी

(ii) नागार्जुन (8)

6. 'हिमालय के आंगन में' कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता का काव्य-सौंदर्य लिखिए।

(8)